शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नरेश मेहता के उपन्यास में प्रयुक्त कथानक शैलियाँ

हनुमान प्रसाद प्रजापति (शोधार्थी)
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

आचार्य शुक्ल ने हिंदी गद्य को आधुनिक काल की महान घटना कहा। गद्य के विकास ने ही उपन्यास को जन्म दिया,और इसके कथ्य, भाषा एवं शैलियों को लेकर भी अनेक उपागम एवं सिद्धांत आये। स्वतंत्रता के बाद अनेक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोविज्ञानिक, आंचलिक उपन्यासों का लेखन हुआ। सन् साठ के बाद स्वतंत्रता के परिदृश्य को लेकर भी अनेक उपन्यास एवं उपन्यासकार आगे आए। जो अपनी कथानक शैली एवं शाब्दिक गांभीर्य के लिए प्रसिद्ध रहे। उनमें नरेश मेहता अग्रणी हैं। वे अभिव्यक्ति की सटीक शैली के लिए जाने जाते हैं। इसलिए उनके उपन्यास विविध कथा शैलियों के लिए जाने जाते हैं। पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रिया हेतु वे विवेचन विश्लेषण शैली का प्रयोग करते हैं, तो पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद एवं आह्लाद हेतु आत्मकथात्मक शैली का उपयोग अपने उपन्यासों में करते हैं। शब्द शिल्पी एवं कवि होने के कारण उनकी भाषा उपन्यासों में कहीं-कहीं काव्यात्मक शैली का रूप भी ले लेती है । इस दृष्टि से वे प्रसाद श्रेणी के रचनाकारों में शामिल होते हैं। काव्यात्मकता के साथ चित्रात्मकता, व्यंग्यात्मकता, पत्रात्मकता, डायरी, समास, व्यास, दृश्य-विधान आदि शैलियों के दर्शन भी उनके उपन्यासों में होते हैं। गंभीर चिंतनपरक आलोचनात्मक शैली का अपने उपन्यासों में प्रयोग कर वे चिंतक एवं आलोचक दृष्टि के कथाकार की श्रेणी में परिगणित होते हैं। कुल मिलाकर उपन्यासकार मेहता जी कथानक शैली प्रयोक्ता की दृष्टि से अप्रतिम आधुनिक उपन्यासकार है। जिसमे उनके सादे कथनों में भी झंकृति का भाव मिलता है। यही उनके उपन्यासों की कथानक शैलियों की विशिष्टता है। प्रस्तुत शोध पत्र में नरेश मेहता के उपन्यासों में कथानक शैलियों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

आचार्य शुक्ल ने हिंदी गद्य को आधुनिक काल की महान घटना कहा। निश्चित रूप से यह थी, और आज जिस प्रकार गद्य के जो विविध रूप हमारे समक्ष आ रहे हैं, वह शुक्ल जी के कथन की पर मोहर है। और इन गद्य विधाओं में उपन्यास केंद्र में है। "गद्य के आविर्भाव के साथ ही उपन्यास विधा ने हिंदी पाठकों के समक्ष अपनी गहरी पैठ बनाई। सेठ साहूकारों, राजा-महाराजाओं, महल-हवेलियों, तिलिस्म-एय्यारियों जैसे कथा प्रसंगो को समेटता यह हिन्दी गद्य रूप हिन्दी प्रेमियों में उपन्यास के रूप में प्रसिद्ध हुआ। ऐतिहासिक, राजनितिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक एवं राष्ट्रीय भावों के पड़ावों को पार करती यह गद्य विधा समय-दर-समय नवीन कथ्यों, मूल्यों, संदर्भो एवं विमर्शो को लेकर आगे बढ़ी।"[1] समय की विकास यात्रा में स्वतन्त्रता के बाद कई रचनाकार, उपन्यास प्रमुख विद्या की ओर झुके। इनमें प्रयोगशील कथाकार नरेश मेहता प्रमुख हैं। जिन्होंने स्वतन्त्रता के बाद की उपन्यास धारा को प्रौढ़ एवं वैचारिक ऊँचाई दी। मेहता जी के 'डूबते-मस्तूल', 'यह पथ बंधु था', 'धूमकेतु एक श्रुति', 'दो एकांत', 'नदी यशस्वी हैं', प्रथम फाल्गुन,

उत्तर कथा, (दो भाग) उपन्यास उनके जीवन बोध, गांधीवाद, आधुनिक भावबोध, वैष्णवी संस्कृति तथा स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत भारत के संघर्ष की गाथा एवं उत्कृष्ट शिल्प विधान तथा कहानी की भूमिका में मेहता जी सशक्त अभिव्यक्ति शैली के लिए जाने जाते हैं। मेहता जी 'जलसाघर' में लिखते हैं- "मेरी आंतरिक एवं बाह्य सारी तैयारी एक कवि की रही हैं, इसलिए स्वत्व की तलाश ही मेरी रचनात्मकता है।"[2]

नरेश मेहता के उपन्यासों में कथानक शैलियाँ

आचर्य विश्वनाथ प्रसाद के अनुसार, "शिल्प के लिए शैली, रूप, अभिव्यक्ति, काफ्ट टेकनिक आदि शब्दों का प्रयोग भी होता हैं। किसी कवि या लेखक की शब्द योजना वाक्यों की बनावट और ध्वनि आदि का नाम ही शैली। भाषा प्रयोग के जिस वैशिष्ट्य द्वारा साहित्यकार अपने भाव या विचार का संप्रेष्य बनता है, उसे हम शैली कहते हैं।"[3]

शैली की महत्ता प्राचीन काल से लेकर आज तक निर्विवादित है। आचार्य वामन के अनुसार "विशिष्ट पद रचना शैली है ।"[4] राबर्ट पेन लिखते हैं "शैली लेखक के मस्तिक की सोंदर्यपूर्ण अभिव्यक्ति है।"[5] कुछ विद्वान प्रभाव पूर्ण अभिव्यक्ति को ही शैली का अर्थ और इति मानते हैं। शशि भूषण सिंहल के शब्दों में, "जो विद्वान शिल्प को शैली के अर्थ में लेते हैं, उन्होंने इसके अंतर्गत वस्तु चयन,उसके गठन पात्र संयोजन, वार्तालाप और उपन्यास की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने की विधि आदि सब समेट लिया है।"[6] इस प्रकार शैली अभिव्यक्ति की पद्धति है जिसका संबंध भाषा से है, क्योंकि वह भाषा प्रेषणीयता का आधार है। इस दृष्टि से नरेश मेहता शब्दों के शिल्पकार एवं शैली के कुशल चितारे हैं। नरेश मेहता ने अपने उपन्यासों की भाषा में सभी शैलियों का प्रयोग किया है।

1 समास शैली - समास का सामान्य अभिधार्थ हैं 'संक्षेप'। शैली की दृष्टि से देखे तो कम से कम शब्दों में अधिकाधिक गूढ़ भावों की अभिव्यक्ति करना ही समास शैली कहलाती हैं। गीताराम शर्मा के मतानुसार "इस शैली के अंतगर्त कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव व्यक्त किये जाते हैं।"[7]

उपन्यासकार नरेश मेहता ने विविध प्रकार के सूत्रों का सहारा लेकर इस शैली का प्रयोग किया है। उत्तर कथा (प्रथम खण्ड) में जीवन की व्याख्या इसी शैली में की गई हैं, "जीवन को यज्ञ माना गया है तथा आयु को समिधा। हमारे कर्म इस अनुष्ठान में 'स्वाह' करते है। प्रत्येक यज्ञ की पूर्णाहुति होती है। जिस दिन आयु का अंतिम दिन पूर्णाहुति में स्वाह हो जाता है, उसी दिन नैष्कर्मता का बोध होना चाहिए न की उस पर प्रलाप करना चाहिए।"[8] इसी प्रकार 'नदी यशस्वी है' उपन्यास में परिवार की करुणगाथा को इस प्रकार व्यक्त किया गया। "मनुष्य वैभव और द्ररिदता में समान रूप से दुःख पाता है। एक पर्यंकशायी दुःख होगा तो दूसरा फुटपाथ पर। इसमें दुःख की मूल स्थिति में कोई गुणात्मक परिवतर्न नहीं हुआ करता।"[9] इसी तरह अन्य उपन्यासों में भी गूढ़ और गंभीर भावों को व्यक्त करने के लिए समास शैली को ही माध्यम बनाया गया हैं।

2 व्यास शैली - व्यास अथार्त फैलाव। कम बात या विचार को अत्यधिक विस्तार के साथ अधिक शब्दों में व्यक्त करना व्यास शैली कहलाती है। सावित्री मिश्र के शब्दों में "व्यास शैली में शैली की अपेक्षाकृत, कथात्मकता, संगीतात्मकता, उपदेशात्मकता एवम् भाषण की शिथिलता

मिलती है।"[10] मेहता जी ने अपने उपन्यासों में इस शैली में अपने विचारों को आगनात्मक-निगनात्मक पद्धति द्वारा अनेक उदाहरणों तथा स्थितियों के चित्रण द्वारा पाठकों तक पहुँचाया। उत्तर कथा-द्वीतीय भाग में दुर्गा का चरित्र चित्रण इसी शैली में किया गया हैं। "मेरा क्या मैं तो साधारण स्त्री हूँ, माँ हूँ। बेटी जब तक अबोध थी दूध पिला दिया। जब उसे चलना आदि आ गया तो उसे उसके घर तक पहुँचा दिया। माँ हूँ तो संतान के सुख में सुखी भी होऊँगी पर ये सब ऋतुएँ हैं।"[11] इसी प्रकार 'यह पथ बंधु था' उपन्यास के पात्र श्रीधर द्वारा अपनी दीदी के वैधव्य से दुःख प्रकट करता है, उसे मेहता जी ने व्यास शैली द्वारा अत्यंत मार्मिक बनाया। "उसे दीदी के वैधव्य से अत्यंत खेद हुआ था। वह जान रहा था कि दीदी जैसे व्यक्ति के लिए उनके पति जैसा न वह व्यक्ति, न उसका वैभव और न उसका वातावरण कुछ भी तो समीचीन न था। जो व्यक्ति उस से आयु में इतना बड़ा था भला दीदी का पति कैसे बन सकता था।"[12] इस प्रकार मेहता जी ने अपने विचारों को व्यास शैली द्वारा उत्कृष्टता प्रदान कर उसे प्रेष्य बनाया।

3. विवेचन-विश्लेषणात्मक शैली - इस शैली में लेखक का अभीष्ट मनोविश्लेषण करना होता है। इसीलिए परिप्रेक्ष्य का अंकन भी पात्रों की क्रिया प्रतिक्रियाओं द्वारा होता है। मेहता जी के उपन्यासों में इस शैली का उत्कृष्ट उदाहरण 'यह पथ बंधु था' उपन्यास में देखा जा सकता है। "श्रीधर एकदम चौंक गए.... और अवाक हो दीदी की ओर देखने लगे जैसे पानी देख रहा हो। इतना स्पष्ट था कि किशन बाबू दीदी के किसी मर्म को छू गए हैं और वे तड़प उठी हैं। तो फिर बोली, तुम्हें नहीं लगता कि उसे ऐसा करना चाहिए।"[13] 'नदी यशस्वी है' उपन्यास में एक स्थान पर निम्न जातीय स्तर के व्यक्ति के यहाँ खाने से परहेज को बड़ी सहज रूप से मनोवैज्ञानिक ढंग से उभरा "जब भवानी ने दोबारा झिड़का तो मैंने इतनी तेजी से खाकर मुँह पूछ पानी पी रहा था, जैसे इस अवांछित को, किसी भी क्षण आ जाने वाला केदार ना देखें।"[14] यहाँ मेहता जी ने पात्रों की पूरी मानसिक मनोवृति को विश्लेषित कर मन को खोल दिया।

4 आत्मपरक शैली - इस शैली में पात्र स्वयं उत्तम या प्रथम पुरुष के रूप में अपनी कथा प्रस्तुत करता है। अमर प्रसाद गणेश प्रसाद जायसवाल के अनुसार "इस शैली में लेखक अपना दृष्टिकोण बड़ी सहजता से प्रस्तुत करता है। रचनाकार अपने स्वयं के अनुभव को जब प्रथम पुरुष में प्रकट करता है, तब वह आत्मकथात्मक शैली हो जाती है।"[15] इस शैली द्वारा उपन्यासकार मेहता जी ने पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद और मानसिक आह्लाद दोनों को उभारा है। 'डूबते मस्तूल' की नायिका रंजना आत्मकथा यों सुनाती है- "यह है अकलंक' उस सैयद का रुमाल। शबे जश्न की सौगात। मेरी पहली नारी जो उसके उत्सर्ग में शायद से मिला। वह यही रुमाल!....।"[16] इसी प्रकार 'नदी यशस्वी है' का उदयन भी अपनी आत्मकथा इसी प्रकार कहता है, "मैं अपनी डेस्क पर झुका हुआ, घर के लिए दिए गणित के दस सवाल में से आखरी सवाल कर रहा हूँ। वह सवाल आ ही नहीं रहा है और मैं रुआँसा हो जाता हूँ।"[17]

5 विवरणात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग करते समय उपन्यासकार तटस्थ द्रष्टा की भांति विषय का वर्णन करता चला जाता है। यह अन्य शैलियों की तुलना में सरल और सुबोध होती है। क्योंकि इसमें वाच्यार्थमूलकता कि विशिष्टता रहती है। डॉ. गणपति चंद्र गुप्त लिखते हैं "विवरणात्मक

शैली में किसी वृत्तांत या घटना का विवरण प्रस्तुत किया जाता है।"[18]

नरेश जी के उपन्यास में इस शैली के सरल प्रयोग मिलते हैं। यहाँ 'डूबते मस्तूल' उपन्यास का प्राकृतिक दृश्य का सरस विवरणात्मक रूप द्रष्टव्य है। "जब मैं छोटी-छोटी पहाड़ियों और विंध्या की गोद में बसे हुए मालवा के इस मिलिट्री सेंटर में पहूँची तो मुझे लगा कि जैसे पहली बार सब कुछ नए रूप में प्रारंभ कर सकूँगी। हमारा हॉस्टल एक टेकरी के ठीक बगल में था।"[19]

'दो एकांत' उपन्यास में भी ऐसा ही वर्णन है, "जब वे लोग नदी तट पर पहुँचे और थोड़ा खुलापन देखा तो वानीरा का भय किंचित कम हुआ। रास्ते भर पत्तों की चरमहाट पर किसी बनेले जंतु की कल्पना करते हुए कांपती आई थी और कम्पित वानीरा और आनंद अपने से अविलग किए रहा।"[20] इस प्रकार मेहता जी ने इस शैली मैं वृतांतता के साथ ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक आदि घटनाओं को रागात्मकता से सरस बनाया।

6. चित्रात्मक शैली - नरेश मेहता नयी कविता आंदोलन के शब्द चित्रकार हैं। वे ऐसे समर्थ उपन्यासकार हैं, जो अपनी लेखनी से प्रभावपूर्ण सजीव शब्दाचित्र प्रस्तुत करते हैं। इनके कथाबिम्ब पाठकों के मन चक्षुओं को सहज ही आकर्षित करते हैं। यहाँ कुछ कथाबिंब द्रष्टव्य हैं। उपन्यास 'नदी यशस्वी है' में उदयन के घुड़सवारी का चित्रात्मक वर्णन देखिए - "और जिन के बाद लहराते खेतों के ऊपर खूब बड़ा सा नीला आकाश खुल जाता हैं। बावड़ी के बड़े से थाले पर पैर लटकाकर में बैठ जाता और मुनीर खां के पुट्ठे सहलाते हुए इस बीच लगभग रोज अपनी जीवनी को बाँचता होता।"[21]

'प्रथम फाल्गुन' उपन्यास की नायिका गोपा का सौंदर्य चित्र मेहता जी की इस शैली का उत्कृष्ट नमूना है, "बड़े लॉन की तीन सीढ़ियाँ गोपा की एड़िया, महिम ने देखा कि कितनी चिकनी एवं आरक्त वर्ण है। प्राय: सीढ़ियाँ चढ़ती महिलायें जितनी आकर्षक लगती हैं। उतने पुरुष नहीं। साड़ी की लय में लुकती छिपती एड़िया महिलात्व के प्रति कैसा इंद्रजाल बुनती चलती है।"[22] इस प्रकार मेहता जी के उपन्यासों में चित्रात्मक शैली के श्रेष्ठ रूप के दर्शन होते हैं। जो शब्दों को चित्रात्मकता देने में सक्षम हैं।

7 चिंतन प्रधान गंभीर शैली - जहाँ कृतिकार अपने समय के समाज, राष्ट्र एवं राजनीति की सिद्धांतवादी व्याख्या करता है, और व्यक्त समस्याओं का विश्लेषण भी करता है, वहाँ शैली गंभीर चिंतन प्रधान हो जाती है। नरेश मेहता के उपन्यास सामाजिक एवं राजनीतिक जागृति के उपन्यास हैं। इसलिए उनके उपन्यासों में लंबे-लंबे वाक्यों द्वारा गंभीर चिंतन को दर्शाया गया है। वहाँ इस शैली को देखा जा सकता है। यथा- 'नदी यशस्वी है' उपन्यास में दूर व्यवस्था एवं गंदगी पर मेहता जी लिखते हैं "ताम्बे की बड़ी सी केतली में जिसकी कलई कई जगहों से छूट गई थी, इसलिए कोढ़ी जैसी लगती, दिन भर चाय का पानी चढ़ा रहता। ग्राहकों में अधिकतर ड्राइवर होते हैं। ग्राहक के आते ही टेबल के नीचे रखी हुई गंदे पानी की बाल्टी में से कप और तश्तरी निकाली जाती। ...शीशे के दो एक मर्तबानों में कई दिनों के बासी सीले बिस्कुट उदासी से झाँकते रहे।"[23]

8. व्यंग्यात्मक शैली - व्यंग्य भाषा का प्रमुख धारदार हथियार है, विशेष रूप से कथा साहित्य में। नरेश मेहता का व्यंग्य कबीर और परसाई श्रेणी का तीखी चोट करने वाला है। अपने

उपन्यासों में अनेक स्थलों पर उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली द्वारा भावों को गांभीर्य एवं प्रेषणीय बनाने के लिए शब्दों की चोट द्वारा समाज में व्याप्त अन्याय, अनाचार, ढोंग, अंधविश्वास, जड़ता का उपहास कर समाज की वास्तविकता को उजागर किया। 'यह पथ बंधु था' उपन्यास में पूजा पाठ और स्त्री के चरित्र के संबंध में किया व्यंग्य द्रष्टव्य है - "नारी अन्यदा हुआ करती है, इसलिए तुम उसे चरित्रहीन भी कह लेते हो। मैं अन्यदा हूँ । इसलिए चरित्रहीन भी हूँ। चंद्रमा का कलंक और ग्रहण तुम पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा, स्नान-ध्यान से दूर कर लेते हो, किंतु हमारे कलंक को धो सकना तुम्हारे पुरुषार्थ की बात नहीं है।"[24]

9.पत्रात्मक शैली - पत्रात्मक शैली का उपयोग मेहता जी ने संपूर्ण कथा साहित्य में किया। जो कहीं-कहीं लंबे पत्र कथाविकास में विषयांतर भी कर देते हैं और कुछ प्रसंगों में कथानक की स्वाभाविकता सहज रूप से भी बढ़ जाती है। 'यह पथ बंधु था' तथा 'उत्तरकथा' द्वितीय खंड उपन्यास उनके इसी शैली के उपन्यास है। असीम दीदी का पत्र यहाँ उदाहरणीय है- "तू मेरा छोटा भाई है। ... अच्छा, तो खूब पढ़ना। एक दिन जब तू बड़ा आदमी बन जाएगा, तो परिवार वाला हो जाएगा, तब मैं जरूर ही आऊँगी अपने श्रीधर के बच्चों को देखने के लिए। ....तेरी असीम दीदी ।"[25]

10 दृश्य विधान शैली- नरेश जी ने अपने उपन्यासों में दृश्य को महत्वपूर्ण माना इसलिए उनके उपन्यासों में दृश्य-विधान शैली का परंपरागत रूप का ही प्रयोग किया। मानो संपूर्ण उपन्यास नाट्य रूप से मंचीय सज्जा में शब्दों में पिरोया गया हो। 'प्रथम फाल्गुन', 'धूमकेतु एक श्रुति' उपन्यास इसी तरह के दृश्य-विधान शैली परक उपन्यास है। "एक धुप भरा सवेरा है एक मालवीय गुजराती माँ, साँवली सी, बल्कि काफी साँवली। जांघो पर धोती चढ़ाये एक बच्चे को जांघों पर औंधा लिटाए नहला रही है।"[26] यहाँ मेहता जी ने पूरा का पूरा दृश्य शब्द रूप में उभार दिया है।

11 संवाद शैली - पात्रों के चरित्र को उद्घाटन करने, उनके मनोभावों का अंकन एवं उनके अंतर्द्वंदों को स्पष्ट करने के लिए संवाद शैली का प्रयोग किया जाता है। नरेश मेहता ने अपने उपन्यासों में उक्त वैशिष्ट्य के लिए संवाद शैली का सहारा लिया। श्रीधर बाबू और नारायण बाबू के बीच संवाद ऐसी ही शैली का उदहारण है। "क्यों श्रीधर! हम लोग भी अपने यहाँ कांग्रेस की शाखा खोल लें तो कैसा रहे ? सरकारी नौकरी करते हुए यह कैसे कर सकते हैं। लेकिन भाई जान। हमने सरकारी नौकरी करने का कोई पट्टा तो लिखा नहीं है। और वह बड़े जोर से हँस दिए। हाँ यह तो ठीक है। मैं भी सरकारी नौकरी को बाधा ही पाता हूँ।"[27]

निष्कर्ष

इस प्रकार नरेश मेहता ने अपने उपन्यासों में लगभग सभी कथा शैलियों का उपयोग कर उपन्यासों को पाठकों के लिए संप्रेषणीय एवं सहज बनाया। उक्त शैलियों के अलावा मेहता जी ने भाषा शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, नाटकीय शैली, परिचयात्मक शैली, प्रश्नोतरी शैली, तर्क शैली, व्याख्यात्मक शैली द्वारा अपने उपन्यासों के कथ्य को वैचारिक एवं कलात्मक रूप से श्रेष्ठ बनाया। अपनी शिल्प, शैली एवं कथ्य को नया संदर्भ देने की कला की दृष्टि से उपन्यासकार मेहता जी स्वतंत्रता के बाद के कथाकारों में अग्रणी हैं। उनके 'सादे कथनों में भी झंकृति का भाव' अनुस्यूत रहता हैं। उनके उपन्यासों की

कथानक शैलियों की यही विशेषता उन्हें अपने समकालीन उपन्यासकारो में अग्रीम पंक्ति में लाकर खड़ा करती हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों के कथ्य का अनुशीलन,कंचन बाला, शब्द्बहम (शोध पत्रिका)17 अगस्त,2017

2 'जलसाघर' की भूमिका से, नरेश मेहता पृष्ठ 1

3 कला एवं साहित्य : प्रवति और परंपरा, विश्वनाथ प्रसाद, पृष्ठ 48

4 काव्यालंकार सूत्र, आचार्य वामन, 21217-8

5. फंडामेंटल ऑफ़ गुड राइटिंग, रॉबर्ट पेन, पृष्ठ 38

6. उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा, शशिभूषण सिंहल, पृष्ठ 257

7. नरेश मेहता के कथा साहित्य में मध्य वर्ग, डॉ. जयकरण, पृष्ठ 335

8. उत्तरकथा, प्रथमखण्ड, नरेश मेहता, पृष्ठ 52

9. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 161

10. अज्ञेय कि गद्य शैली, सावित्री मिश्र, पृष्ठ 32

11. उत्तरकथा, द्वितीय भाग, नरेश मेहता, पृष्ठ 262

12. यह पथ बंधु था, नरेश मेहता, पृष्ठ 158

13. यह पथ बंधु था, नरेश मेहता, पृष्ठ 283-284

14. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 72-73

15. हिन्दी लघु उपन्यास, अमर प्रसाद- गणेश प्रसाद जायसवाल, पृष्ठ 91

16. डूबते-मस्तूल, नरेश मेहता, पृष्ठ 75

17. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 75

18. साहित्यिक निबंध, गणपति चन्द्रगुप्त, पृष्ठ 437

19. डूबते-मस्तूल, नरेश मेहता, पृष्ठ 66

20. दो एकांत, नरेश मेहता, पृष्ठ 101

21. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 73

22. प्रथम फाल्गुन, नरेश मेहता, पृष्ठ 69

23. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 40-41

24. यह पथ बंधु था, नरेश मेहता, पृष्ठ 194

25. यह पथ बंधु था, नरेश मेहता, पृष्ठ 152-153

26. धूमकेतु एक श्रुति, नरेश मेहता, पृष्ठ 5

27. यह पथ बंधु था, नरेश मेहता, पृष्ठ 41